E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 11-04-2025
Accepted: 24-05-2025

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 3; 2025; Page No. 71-73

चाँचरी सामूहिक नृत्यगीत शैली

डॉ. पंकज उप्रेती

प्रभारी संगीत विभाग, राजकीय महाविद्यालय टनकपुर जिला चम्पावत, उत्तराखण्ड, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15863787

Corresponding Author: डॉ. पंकज उप्रेती

सारांश

उत्तराखण्ड के कुमाऊँ अंचल में प्रचलित चाँचरी एक सामूहिक लोकनृत्य–गीत शैली है, जो भावनात्मक अभिव्यक्ति, लयात्मकता और सामूहिकता का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है। यह लोकगीत परंपरा पर्वतीय जनजीवन की सांस्कृतिक विविधता, कलाप्रियता और सामाजिक एकता को दर्शाती है। चाँचरी गीतों में धार्मिक, श्रृंगारिक, सामाजिक तथा समसामयिक विषयों का समावेश होता है। यह गीत–नृत्य शैली वृत्ताकार समूहों में स्त्री–पुरुषों द्वारा सामूहिक रूप से प्रस्तुत की जाती है, जिसमें गायन के साथ नृत्य की पदसंचालन प्रक्रिया लयबद्ध होती है। चाँचरी की लोकप्रियता का मूल कारण इसकी सहजता, लोकसंवेदना तथा सामूहिक उल्लास है। प्रस्तुत शोध में चाँचरी के क्षेत्रीय स्वरूप, भावबोध और लोक जीवन में उसके सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण किया गया है।

मूल शब्दः चाँचरी, लोकगीत, कुमाऊँ, उत्तराखण्ड, लोकनृत्य, सामूहिकता, पर्वतीय संस्कृति, लोकसंगीत, लोक अभिव्यक्ति, श्रृंगारिक गीत, लोकसंवेदना, नृत्यगीत।

प्रस्तावना

लोक कंठ से फूटे स्वरों की विशेष लयात्मकता में लघुकाय और सुसम्बद्धता पाई जाती है। यहीं से लोकगीतों का उदय होता है। गीत भावनाओं की वह अभिव्यक्ति है जिसमें कम शब्दों में अधिक मनोभाव व्यक्त होते हैं। 'गीत' के रूप में इन रचनाओं में न तो अनावष्यक विस्तार पाया जाता है और व ही विविध भावनाओं का संघर्ष। लोक के अन्तःसलि से निःसृत होने वाली मनोहर निर्झरिणी के रूप में संगीत प्रकट होता है, जिसमें भावनात्मक घनत्व अधिक होता है। लोकगीतों की यह अभिव्यक्ति सामूहिकता के साथ अपने चरम तक थिरकन देने लगती है। इसी की एक शैली है– चाँचरी।

उत्तराखण्ड के कुमाऊँ अंचल में चाँचरी का प्रचलन है। सामुहिक अभिव्यक्ति के साथ पदसंचालन के क्रम को देखते हुए इसे सिर्फ गीत न कहकर नृत्यगीत कहना उचित प्रतीत होता है। लोक संगीत और नृत्य पर चर्चा करते हुए 'लोक कला' में कहा गया है– ''हिमालय की गोद में बसे हुए कुमाऊँ की अभिव्यक्ति यदि किसी माध्यम से उभर आती है तो, वह है वृत्त नृत्य चाँचरी। चाहे कोई त्यौहार हो, कोई मेल मिलाप का अवसर हो, जहाँ भी कुछ कुमाऊँ की धरती के बेटे एकत्र होंगे, वह यह वृत्त नृत्य जरूर दिख पड़ेगा।''[1] इसी में तत्कालीन मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्रीमान सम्पूर्णानन्द ने कहा था– 'लोक कला में हमें सामन्य जन के अर्न्तनिहित भावों और विचारों की झाँकी मिलती है। इस जीवन को समझने और और उसको अनुकूल दिशा में ले जाने के हेतु लोक कला को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना आवश्यक है।''[2]

लोकगीतों में प्रबन्ध और मुक्तक गीतों की लम्बी श्रृखला है। इसमें एकल और समूह प्रस्तुतियाँ की जाती हैं। विरह की एकल प्रस्तुति न्यौली गीत है तो प्रश्नोत्तर गीत की शैली– बैर गीत।[3] पर्वतांचल की सुरम्यता और दूरुहता वैसे भी समाज को जोड़ती है जिसके सधे सुर गीतों को आकार देते हैं और इसकी धुनें तरंगित करती हैं। हिन्दी के युगप्रवर्तक कवि और भारतीय संस्कृति को दिशा देने में अग्रणी सुमित्रानन्दन पन्त ने कहा था– ''कूर्मांचल प्रदेष अपने लोक गीतों के लिए प्रसिद्ध है। पर्वतीय जन वैसे भी अत्यन्त कलाप्रिय और जीवनप्रिय हुआ करते हैं। लोक गीतों और लोक नृत्यों में जो शक्तिपूर्ण तथा स्फूर्तिप्रद तत्व मिलते हैं उनसे इस युग में संसार के समस्त देश प्रेरणा ग्रहण कर रहे हैं।''[4]

लोकगीतों के कई प्रकारों में से सबसे ज्यादा चलित 'चाँचरी' है। यह नृत्य के साथ गाया जाने वाला गीत है। इसका प्रारम्भ प्रार्थना, मंगल वाचन, कुषलता एवं स्त्री–पुरुषों के दोहरों के रूप में अविराम गति से लम्बे अन्तराल तक गाया जाता है।[5] चाँचरी में स्त्री–पुरुष दोनों भाग लेते हैं। इसमें गति और पदक्रम का विशेष महत्व होता है। वृत्त निर्मित करके ये गीत व नृत्य होते हैं, जिसमें स्त्री और पुरुष वृत्ताकार रूप में दो दलों में विभक्त होते हैं। परस्पर एक–दूसरे का हाथ पकड़कर पाँव एक बार आगे उठाते हैं, फिर पीछे। यह क्रम गीत के साथ चलता है। नृत्य में कमर झुकी होती है, जिसे 'ल्यूँणन' कहते हैं। केवल महिलाओं या

केवल पुरुषों द्वारा पृथक–पृथक रूप से वृत्त निर्मित करके भी चाँचरी होती है। लोकसंस्कृति के मर्मज्ञ प्रो. देवसिंह पोखरिया कहते हैं– 'चाँचरी गीत मेलों के नृत्यगीत हैं। कुमाऊँ के दानपुर, नाकुरी, सनगाड़ आदि क्षेत्रों में प्रचलित चाँचरियां विशेष प्रसिद्ध हैं।'[6] सनगाड़ का उल्लेख करती एक चाँचरी गीत प्रस्तुत है–

सनगाड़ की नौमि राधा त्यार लटी लै लाल् रेवन्।
हिट म्यारा दगाड़ा राधा त्यार लटी लै लाल् रेवन्।
त्यार् दगाड़ा में मैं आनूं त्यार टौर्चा का स्याल् खतम्।
मैं औनूं लौंडा मोहना त्यार टौर्चा का स्याल् खतम्।
बल्दया टाट बल्द्या त्यार लटी लै लाल् रेवन्।
बाजो टिन्टिन राधा त्यार लटी लै लाल् रेवन्।
चिट्ठी में जवाब दिये त्यार लटी लै लाल् रेवन्।
बाटुई दिन्दिन राधा त्यार लटी लै लाल् रेवन्।
सनगाड़ की नौमि राधा त्यार लटी लै लाल् रेवन्।.....

(सनगाड़ की नवमी को, राधा तुम्हारी चोटी में लाल रिबन। चलो मेरे साथ, राधा तुम्हारी चोटी में लाल रिबन। तुम्हारे साथ मैं नहीं आती, तुम्हारे टौर्च के सेल खतम। नहीं आती ओ लड़के मोहन, तुम्हारी टौर्च के सेल खतम। बैल के गले में बल्दिया घण्टी, तुम्हारी चोटी पर लाल रिबन। बैल के गले में टिनटिन/ध्वनि, राधा चोटी पर लाल रिबन। चिट्ठी में जवाब देना, तुम्हारी चोटी में लाल रिबन। हिचकी/याद करना दिन–दिन, राधा तुम्हारी चोटी पर लाल रिबन। सनगाड़ की नवमी को, राधा तुम्हारी चोटी पर लाल रिबन..... ।)

लेक कलाकार संघ अपनी खोजबीन में बताया है कि चाँचरी नाम वस्तुतः दानपुर के उस इलाके के ही नृत्य को दिया जाता है जो पिण्डारी ग्लेशियर के मार्ग में गढ़वाल अल्मोड़ा की सीमा का भाग है। अल्मोड़ा नैनीताल के अन्य भाग में इस नृत्य शैली को झोड़ा नाम से जाना जाता है। इस लोक नृत्यगीत की लोकप्रियता का कारण इसकी सामुहिकता है।[7] इसमें श्रृंगार, धार्मिकता, लोक विश्वास, समसामयिकता आदि विषयों को गाकर नृत्य होता है। 'देवर भाभी', 'भीना साली', 'प्रेमी–प्रेमिका' आदि से सम्बन्धित चाँचरियों में सम्वादकता मिलती है। प्रस्तुत है उदाहरण–

रहौट की तान गीता ओ गीता त्वैकैं उण् पड़ल।
मड्वा रोटो सिणु को साग ओ गीता त्वैकैं खाण् पड़ल।
देइ में तेरी इज् बैठछ खिड़की बाटा ऊण् पड़ल।
झाँवर की घाण गीता ओ गीता त्वैकैं खाण् पड़ल।
पैली लैंछे घाणी माथा खिड़की बाटा ऊण् पड़ल।
पैं नैं औंने चाण गीात खिड़की बाटा ऊण् पड़ल।
रहौट की तान गीता ओ गीता त्वैकैं उण् पड़ल।.....[8]

(रहट की तान गीता, ओ गीता तुम्हें आना पड़ेगा। कोदो की रोटी, बिच्छू का साग, ओ गीता तुम्हें खाना पड़ेगा। देहरी में तुम्हारी माँ बैठी है, खिड़की के रास्ते आना पड़ेगा। झँगोरा/अन्न का ढेर गीता, ओ गीता तुम्हें खाना पड़ेगा। पहले लगाते हो घनी प्रीति, खिड़की के रास्ते आना पड़ेगा। फिर देखने तक नहीं आते, गीता खिड़की के रास्ते आना पड़ेगा। रहट की तान गीता, ओ गीता तुम्हें आना पड़ेगा।.....)

अब एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है–
हुण देश हुणियाँ का डाँग बाजौ डुँगर बाजौ।
हीरा भली बाना का पाँयाँ को पैलिया छाजौ।
ओ मेरी रुपसा का मखिया आँगड़ी छाजौ।
हीरा भली बाना का घुनघुना घगिया छाजौ।
हुण देश हुणियाँ को डाँग बाजौ डुँगर बाजौ।
ओ मेरी रुपस का ख्वारा में पिछौड़ि छाजौ।
हीरा भली बाना का कमर– पागड़ छाजौ।
ओ मेरी रुपसा का गवै की हँसुलि छाजौ।.....

चित्रा 1: गंगोलीहाट में आठू–सातू पर्व के अवसर और बेरीनाग में नाग पंचमी मेले के दौरान के चित्र

(हूणदेश के लामा का डाँग वाद्य बजे, डमरू बजे। अत्यन्त रूपसी हीरा के पैरों के पायल छाजे। ओ मेरी रूपसी के मखमल की आँगिया छाजे। अत्यन्त रूपसी हीरा के घुटनों तक लहंगा छाजे। हूणदेश के लामा का डाँग बजे, डमरू बजे। ओ मेली रूपसी के सिर में ओढ़नी छाजे। अत्यन्त रूपसी हीरा के कमर की करघनी छाजे। ओ मेरी रूपसी के हाथों की कंगन छाजे।.....)

चाँचरी नृत्यगीत का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकलता है कि लोक का संगीत स्वतःस्फूर्त है और जब लोक जन उमंगित हाता है तो वह थिकरने लगता है। दुनियाभर में सुर–लय ने मानव सभ्यताओं को ठहराव दिया है तभी तो वह सामुहिकता के साथ एकता प्रदर्शित करते हैं। साथ ही मनोरंजन भी करते हैं। यही सब पहाड़ की चाँचरी शैली में भी है।

सन्दर्भ

1. लोक कला–2, लोक कलाकार संघ अल्मोड़ा द्वारा प्रकाशित पुस्तिका, सन् 1956, देशभक्त प्रेस अल्मोड़ा, पृष्ठ– 24
2. लोक कला–2, लोक कलाकार संघ अल्मोड़ा द्वारा प्रकाशित पुस्तिका, सन् 1956 में मुख्यमंत्री जी का सन्देश
3. उत्तरांचल के लोक गीतों का साहित्यिक एवं गीतात्मक अध्ययन, डी.लिट्. शोध प्रबन्ध डॉ. पंकज उप्रेती, सन् 2010, पृष्ठ 89
4. लोक कलाकार संघ अल्मोड़ा के सरंक्षक के रूप में महाकवि सुमित्रानन्दन जी द्वारा लोक कला–2, में दिया गया सन्देश। सन् 1956. पृष्ठ– 6
5. पिघलता हिमालय यूट्यूब चैनल पर सम्बन्धित वीडियो हैं।
6. कुमाऊँ के लोकगीत, डॉ.देवसिंह पोखरिया, प्रकाशक– मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद, संस्कृति विभाग भवन, भोपाल। पृष्ठ– 123
7. लोक कला–2, लोक कलाकार संघ अल्मोड़ा द्वारा प्रकाशित पुस्तिका, सन् 1956, देशभक्त प्रेस अल्मोड़ा, पृष्ठ– 25
8. उत्तरांचल के लोक गीतों का साहित्यिक एवं गीतात्मक अध्ययन, डी.लिट्. शोध प्रबन्ध डॉ. पंकज उप्रेती, सन् 2010, पृष्ठ 89

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.